



ISSN : 2249-930X

पीयर रिव्यूड व यू.जी.सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल

# हिंदी अनुशीलन त्रैमासिकी



दादूदयाल विशेषांक

प्रधान संपादक  
प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय

संपादक  
प्रो. नरेन्द्र मिश्र

## अनुक्रम

1. विमर्श  
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय 1
2. संवाद  
प्रो. नरेन्द्र मिश्र 6
3. संत काव्य में प्रतिरोधी स्वर  
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित 20
4. दादू पंथ के शिखर संत और उनकी रहस्य साधना  
प्रो. राधेश्याम दूबे 25
5. दादू पंथी संत कवियों का लोक जागरण और मानव मूल्य  
डॉ. भरत सिंह 38
6. दादू का विरह  
प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल 45
7. संतकाव्य परम्परा में संत शिरोमणी दादूदयाल  
डॉ. निर्मला अग्रवाल 54
8. हिन्दी साहित्य को दादू पंथ की देन  
डॉ. अमरेन्द्र त्रिपाठी 68
9. आलोचकों की दृष्टि में संत जगजीवन दास  
डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह 77
10. दादू की प्रासंगिकता  
डॉ. राजेश कुमार गर्ग 86
11. जाग रे! सब रैन बिहाड़ी (संत कवि दादू दयाल का समाज चिंतन)  
डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी 90
12. दादू के काव्य में मानव मूल्य  
डॉ. गीता कपिल 102
13. संत दादू की भक्ति और काव्य संवेदना  
डॉ. विवेकानंद उपाध्याय 106

# जाग रे ! सब रैन बिहाड़ी (संतकवि दादू दयाल का समाज चिंतन)

• डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

भारतीय कविता के इतिहास में भक्तिकाल को स्वर्णयुग माना गया है। भक्तिकाल हिन्दी ही नहीं, भारतीय कविता में मध्यकाल की सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना के निर्माण का काल भी कहा गया है। दक्षिण भारत से प्रवाहित भक्ति की अखण्ड धारा, उत्तर भारत ही नहीं, पश्चिम और पूर्व भारत में भी व्याप्त हुई। दार्शनिक सिद्धांतों की ठोस आधार भूमि पर समृद्ध होकर भक्ति उत्तर भारत में एक आंदोलन के रूप में फैल गयी थी। संत, भक्त और सूफी कवियों ने देश की दीन-दुखी, लाचार, लगभग पराजित हिंदू जनता के मन में आस्था, भक्ति, विश्वास, कर्म और ज्ञान की जो अखण्ड ज्योति जलाई, उसके प्रभाव से सम्पूर्ण मानवीय सत्ता जागृत हो उठी। हताशा और निराशा के भँवर में डूबने से मनुष्य को बचाने का जो बीड़ा हमारे संत-भक्त कवियों ने उठाया था वह भारतीय मनीषा के जागरण का अविस्मरणीय काल था। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार "भक्ति साहित्य एक महती साधना और प्रेम-उल्लास का साहित्य है। यहाँ जीवन के सभी विषाद, निराशाएँ तथा कुंठाएँ मिट जाती हैं। इसमें निमंजन करके भारतीय जनता को अलौकिक सुख और शांति मिलती है। यह सुख-शान्ति अन्य किसी काल में सम्भव नहीं है।"

भारतीय ज्ञान-परंपरा की समृद्ध विरासत में मानवता के मंगल हेतु विचार, कथाएँ, प्रसंग, चरित्र आदि को काव्य का उपजीव्य बना लेना उस युग में सामान्य बात नहीं थी। भगवद्भक्ति की यात्रा निर्गुण मार्ग से होते हुए सगुण मार्ग पर आगे बढ़ती है। निर्गुण संतों और सगुण भक्तों ने भेद नहीं माना है। तुलसीदास बहुत स्पष्ट शब्दों में कहते हैं— 'अगुनहिं सगुनहिं नहिं कछु भेदा।' या फिर 'निर्गुण की सेवा कर, सरगुण का कर ध्यान।' निर्गुण सरगुण से परे तहाँ हमारे ध्यान। वास्तव में निर्गुण-सगुण दोनों ही मार्ग भगवद्भक्ति के लिए सार्थक सिद्ध हुए और जीवनमूल्यों के सृजन-संरक्षण का मार्ग प्रशस्त हुआ। परमसत्ता को समझने के लिए मन और आत्मा की देहरी पर ज्ञान, प्रेम और भक्ति का जो अखण्ड दीप प्रज्ज्वलित हुआ उसके दिव्य और व्यापक प्रकाश में मानवता की राह खुली और जनजीवन में सद्गुणों का विकास हुआ। अज्ञानता, अधर्म, अनीति, अमंगल का नाश हुआ। धर्म को नये सिरे से समझने की सार्थक कोशिश हुई। यह सच है कि 'एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति' के कारण परमसत्ता, सच्चिदानन्द भगवान को विभिन्न कोणों से ज्ञानियों ने देखा-समझा और परखा भी। सम्पूर्ण ईश्वर-भक्ति, शाश्वत जीवन-मूल्यों, संत-भक्तों की कथनी-करनी और रहनी तथा वह सबकुछ जो मानव के जीवन-सौंदर्य को प्रतिष्ठित और व्यापक बनाने के लिए सनातनकाल से धर्मशास्त्रों में अनुस्यूत है, उसे ढूँढ़ने का एक मात्र साधन भक्तिकाव्य था। रामानन्द और उनकी शिष्य परंपरा-कबीर, रैदास, नामदेव, पीपा, नानक आदि संत कवियों की एक समर्थ एवं लंबी शृंखला है। इन्होंने अज्ञान, मोह, कुरीतियों, मानसिक संकीर्णताओं में फँसे मनुष्य को सहज जीवनयापन का मार्ग दिखाया। आज भी उनके विचारों की, चिंतन और भक्ति की सार्थकता बनी हुई है।

भक्तिकाव्य में हृदय, बुद्धि और आत्मा को संतृप्ति करने की शक्ति और क्षमता है। हिंदी अनुशीलन ISSN : 2249-930X / 90